आधुनिक विश्व में चरवाहे

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» घुमंतू चरवाहे: परिचय और जीवनशैली

प्रश्न 1 (आसान). घुमंतू चरवाहे किसे कहते हैं?
उत्तर – ऐसे लोग जो अपनी रोज़ी-रोटी के लिए एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते हैं, आमतौर पर अपने जानवरों के साथ।

प्रश्न 2 (आसान). चरवाहे अपने साथ कौन से जानवर रखते हैं?
उत्तर – भेड़, बकरियाँ, ऊँट, गाय, भैंस जैसे मवेशी।

प्रश्न 3 (मध्यम). घुमंतू चरवाहे इतिहास की किताबों में अक्सर क्यों नहीं मिलते?
उत्तर – क्योंकि आमतौर पर इतिहास में सिर्फ़ कृषि और उद्योग पर ध्यान दिया जाता है, और चरवाहों के जीवन को कम महत्व दिया गया है।

प्रश्न 4 (कठिन). घुमंतू चरवाहों की जीवनशैली किस बात पर निर्भर करती है?
उत्तर – उनकी जीवनशैली मुख्य रूप से मौसम के बदलावों और चरागाहों की उपलब्धता पर निर्भर करती है। वे अपने जानवरों के लिए चारा और पानी ढूंढते हुए चलते हैं।

» पहाड़ी चरवाहे: गुज्जर बकरवाल

प्रश्न 5 (आसान). गुज्जर बकरवाल मुख्य रूप से किस भारतीय राज्य से संबंधित हैं?
उत्तर – जम्मू और कश्मीर

प्रश्न 6 (आसान). गुज्जर बकरवाल सर्दी में अपने जानवरों को लेकर कहाँ जाते हैं?
उत्तर – शिवालिक की निचली पहाड़ियों में

प्रश्न 7 (मध्यम). गुज्जर बकरवाल गर्मियों में किस दर्रे को पार कर कश्मीर की घाटी में जाते हैं?
उत्तर – पीर पंजाल दर्रे को

प्रश्न 8 (कठिन). गुज्जर बकरवाल की मौसमी आवाजाही का मुख्य कारण क्या है? विस्तार से बताओ।
उत्तर – उनकी मौसमी आवाजाही का मुख्य कारण अपने भेड़-बकरियों के लिए चारे और पानी की तलाश है। सर्दियों में ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ जम जाती है, तो चारा नहीं मिलता, इसलिए वे निचली पहाड़ियों में आते हैं। गर्मियों में बर्फ़ पिघलने पर ऊँचे पहाड़ों में हरी घास उग आती है, तो वे वहाँ चले जाते हैं ताकि उनके पशु स्वस्थ रह सकें और उन्हें पर्याप्त भोजन मिल सके।

» पहाड़ी चरवाहे: गद्दी समुदाय

प्रश्न 9 (आसान). गद्दी समुदाय भारत के किस राज्य से संबंधित है?
उत्तर – हिमाचल प्रदेश

प्रश्न 10 (आसान). गद्दी चरवाहे किस प्रकार की आवाजाही करते हैं?
उत्तर – मौसमी आवाजाही (Transhumance)

प्रश्न 11 (मध्यम). गद्दियों की मौसमी आवाजाही गुज्जर बकरवालों से किस प्रकार मिलती-जुलती है?
उत्तर – दोनों ही समुदाय सर्दियों में निचली पहाड़ियों में आते हैं और गर्मियों में ऊँचे पहाड़ों पर घास के मैदानों में जाते हैं, ताकि उनके पशुओं को पर्याप्त चारा मिल सके।

प्रश्न 12 (कठिन). गद्दी समुदाय के लोग सर्दियों की फ़सलें काटने और गर्मियों की फ़सलें बोने के लिए वापसी में कहाँ रुकते हैं? इससे उनकी ज़िंदगी में क्या दिखाता है?
उत्तर – वे वापसी में लाहौल और स्पीति के गाँवों में रुकते हैं। यह दिखाता है कि वे सिर्फ़ पशुपालन ही नहीं करते, बल्कि कृषि से भी जुड़े हैं और स्थानीय कृषि चक्र का भी हिस्सा हैं।

» पहाड़ों में चरवाहा समुदायों की सामान्य विशेषताएं

प्रश्न 13 (आसान). भोटिया और शेरपा समुदाय भारत के किस पहाड़ी क्षेत्र से संबंधित हैं?
उत्तर – उत्तराखंड और नेपाल के पास हिमालय क्षेत्र।

प्रश्न 14 (आसान). चरवाहा समुदायों की मौसमी आवाजाही का एक मुख्य कारण क्या है?
उत्तर – अपने पशुओं के लिए ताज़ा चारा ढूंढना।

प्रश्न 15 (मध्यम). चरवाहा समुदायों की आवाजाही चरागाहों के कुशल उपयोग में कैसे मदद करती है?
उत्तर – यह आवाजाही चरागाहों को ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल होने से बचाती है और उन्हें दोबारा हरा-भरा होने का समय देती है।

प्रश्न 16 (कठिन). अगर चरवाहा समुदाय मौसमी आवाजाही न करें तो इसका पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – अगर वे आवाजाही न करें, तो एक ही जगह के चरागाह खत्म हो जाएंगे, मिट्टी की उर्वरता कम हो जाएगी, और पर्यावरण का संतुलन बिगड़ सकता है।

» पठारों और मैदानों के चरवाहे: धंगर समुदाय

प्रश्न 17 (आसान). धंगर समुदाय महाराष्ट्र के किस क्षेत्र से संबंधित है?
उत्तर – धंगर समुदाय महाराष्ट्र के मध्य पठारों और कोंकण तटीय क्षेत्र से संबंधित है।

प्रश्न 18 (आसान). धंगर समुदाय मुख्य रूप से कौन से जानवर पालता है?
उत्तर – धंगर समुदाय मुख्य रूप से भेड़-बकरियां पालता है।

प्रश्न 19 (मध्यम). धंगर और कोंकण के किसानों के बीच क्या तालमेल था?
उत्तर – धंगर समुदाय के मवेशी खरीफ की कटाई के बाद खेतों में बची हुई ठूंठों को खाते थे और उनके गोबर से खेतों को खाद मिलती थी। इसके बदले कोंकणी किसान धंगरों को चावल देते थे।

प्रश्न 20 (कठिन). धंगर समुदाय पठारों से कोंकण तट की ओर कब और क्यों जाते थे, और फिर वापस कब लौटते थे?
उत्तर – धंगर अक्टूबर के आसपास बाजरे की कटाई के बाद पठारों से कोंकण तट की ओर चरागाहों की तलाश में जाते थे। वे मॉनसून की बारिश शुरू होते ही कोंकण छोड़कर सूखे पठारों की तरफ लौट जाते थे क्योंकि भेड़ें गीले मॉनसूनी हालात को बर्दाश्त नहीं कर पातीं।

» दक्षिण भारत के पठारी चरवाहे: गोल्ला, कुरुमा, कुरुबा

प्रश्न 21 (आसान). गोल्ला समुदाय के लोग मुख्य रूप से कौन से पशु पालते थे?
उत्तर – गाय और भैंस

प्रश्न 22 (आसान). कुरुमा और कुरुबा समुदाय के लोग कौन से पशु पालते थे?
उत्तर – भेड़ और बकरियां

प्रश्न 23 (मध्यम). दक्षिण भारत के चरवाहे अपनी यात्राएँ सर्दी-गर्मी के बजाय किस मौसम के हिसाब से करते थे?
उत्तर – बरसात और सूखे मौसम के हिसाब से

प्रश्न 24 (कठिन). बारिश के दिनों में तटीय इलाकों में भैंसें क्यों रह सकती थीं जबकि बाकी जानवरों को सूखे पठारों पर ले जाना पड़ता था?
उत्तर – क्योंकि बारिश में तटीय इलाके दलदली हो जाते थे जो सिर्फ भैंसों के लिए अनुकूल होते हैं, जबकि भेड़-बकरियों और गायों को ऐसी जगह पर दिक्कत होती थी।

» बंजारे: व्यापारिक और चरवाहा समुदाय

प्रश्न 25 (आसान). बंजारे भारत के किन-किन राज्यों में पाए जाते थे?
उत्तर – उत्तर प्रदेश, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र.

प्रश्न 26 (आसान). बंजारे सिर्फ़ पशुपालक थे या व्यापारी भी?
उत्तर – बंजारे पशुपालक के साथ-साथ व्यापारी भी थे.

प्रश्न 27 (मध्यम). बंजारे अपने जानवरों का इस्तेमाल किस काम के लिए करते थे?
उत्तर – बंजारे अपने जानवरों का इस्तेमाल सामान, खासकर अनाज, को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने और व्यापार करने के लिए करते थे.

प्रश्न 28 (कठिन). बंजारों को अपने रास्तों में किन दो मुख्य चीज़ों की ज़रूरत पड़ती थी और क्यों?
उत्तर – बंजारों को अपने रास्तों में अनाज के व्यापार के लिए ग्राहक और अपने जानवरों के लिए अच्छे चरागाहों की ज़रूरत पड़ती थी, क्योंकि वे व्यापार के लिए जानवरों पर ही निर्भर थे और जानवरों को खिलाना ज़रूरी था.

» रेगिस्तान के चरवाहे: राइका समुदाय

प्रश्न 29 (आसान). राइका समुदाय मुख्य रूप से किस पशु को पालता है?
उत्तर – ऊँट।

प्रश्न 30 (आसान). राइका लोग किस राज्य के रेगिस्तानी इलाकों में रहते हैं?
उत्तर – राजस्थान।

प्रश्न 31 (मध्यम). राइका समुदाय के लोगों को मौसमी आवाजाही क्यों करनी पड़ती है?
उत्तर – रेगिस्तान में बारिश कम होती है और अक्टूबर तक चारागाह सूख जाते हैं, इसलिए उन्हें अपने जानवरों के लिए नए चरागाह और पानी की तलाश में दूसरी जगहों पर जाना पड़ता है।

प्रश्न 32 (कठिन). राइका समुदाय के लोग खेती के साथ-साथ चरवाही क्यों करते हैं? इसके पीछे का मुख्य कारण क्या है?
उत्तर – राइका समुदाय रेगिस्तानी इलाकों में रहता है जहाँ बारिश बहुत अनियमित और कम होती है। इस कारण खेती की पैदावार भरोसेमंद नहीं होती और कई बार फसल नहीं होती। इसलिए, खेती से पूरी तरह गुजारा नहीं हो पाता, और वे अपनी जीविका चलाने के लिए चरवाही, खासकर ऊँट पालने का काम करते हैं।

» चरवाहों के जीवन के प्रबंधन की चुनौतियाँ

प्रश्न 33 (आसान). चरवाहे अपने जानवरों के लिए सबसे ज़रूरी क्या खोजते हैं?
उत्तर – पानी और चरागाह

प्रश्न 34 (आसान). चरवाहे किस तरह के मौसम में पहाड़ की निचली जगहों पर आते हैं?
उत्तर – सर्दियों में

प्रश्न 35 (मध्यम). चरवाहों को स्थानीय किसानों के साथ अच्छे संबंध क्यों बनाने पड़ते हैं?
उत्तर – ताकि उनके जानवर किसानों के खेतों को नुकसान न पहुँचाएँ और वे रास्ते या चरागाह के लिए अनुमति दे सकें.

प्रश्न 36 (कठिन). मौसमी आवाजाही से चरागाहों को क्या फायदा होता है?
उत्तर – इससे चरागाहों का अत्यधिक उपयोग नहीं होता और उन्हें दोबारा हरा-भरा होने और जीवन लौटाने का समय मिल जाता है.

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. एक घुमंतू चरवाहा समुदाय, मान लो हिमाचल प्रदेश के 'गद्दी' हैं, जो सर्दियों में शिवालिक की निचली पहाड़ियों में रहते हैं और गर्मियों में लाहौल-स्पीति के ऊँचे चरागाहों में चले जाते हैं। बताओ, उनकी यह आवाजाही क्यों ज़रूरी है?

› पहला कदम है समझना कि क्यों उन्हें एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता है। इसका मुख्य कारण है उनके जानवरों के लिए चारा।

› सर्दियों में, ऊँचे पहाड़ बर्फ़ से ढक जाते हैं, इसलिए वहाँ चारा नहीं मिलता।

› गर्मियों में, निचले इलाके में सूखा पड़ने लगता है या गर्मी बढ़ जाती है और ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ पिघलती है जिससे हरे-भरे घास के मैदान (बुग्याल) निकल आते हैं।

› तो, चरागाह की उपलब्धता और मौसम के बदलाव के हिसाब से ही उनकी आवाजाही होती है। यह उनके जानवरों को स्वस्थ रखने और उन्हें भोजन उपलब्ध कराने के लिए ज़रूरी है।

उत्तर – गद्दियों की मौसमी आवाजाही उनके जानवरों (भेड़-बकरियों) के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करती है, क्योंकि सर्दियों में ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ होती है और गर्मियों में निचले इलाकों में सूखा पड़ता है।

उदाहरण 2. गुज्जर बकरवाल समुदाय सर्दी और गर्मी में किस प्रकार की मौसमी आवाजाही करते हैं, वर्णन करें।

› पहले समझेंगे कि गुज्जर बकरवाल जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में रहते हैं और मुख्यतः भेड़-बकरियाँ पालते हैं।

› फिर देखेंगे कि सर्दियों में, जब ऊँची पहाड़ियों पर बर्फ़ जम जाती है, तो उनके जानवर चारा नहीं खा पाते। इसलिए, वे अपने रेवड़ों (झुंडों) को लेकर शिवालिक की निचली पहाड़ियों की तरफ़ चले आते हैं।

› इसके बाद, जैसे ही अप्रैल के अंत तक गर्मियाँ शुरू होती हैं और पहाड़ों पर जमी बर्फ़ पिघलने लगती है, हरे-भरे घास के मैदान (बुग्याल) दिखने लगते हैं।

› तब ये गुज्जर बकरवाल 'काफ़िला' बनाकर, पीर पंजाल के दर्रों को पार करते हुए कश्मीर की घाटी के ऊँचे पहाड़ों में चले जाते हैं ताकि उनके जानवरों को ताज़ा और पौष्टिक चारा मिल सके।

› सितंबर के अंत तक, जब पहाड़ों पर फिर से ठंड बढ़ने लगती है और बर्फ़ गिरने का डर होता है, तो वे वापस अपने सर्दियों वाले ठिकानों, यानी निचली पहाड़ियों की तरफ़ लौट आते हैं।

उत्तर – गुज्जर बकरवाल सर्दी में बर्फ़ से बचने के लिए शिवालिक की निचली पहाड़ियों में आते हैं और गर्मियों में ताज़े चरागाहों के लिए कश्मीर घाटी के ऊँचे बुग्यालों में चले जाते हैं, सितंबर में फिर नीचे लौट आते हैं। यह एक व्यवस्थित मौसमी आवाजाही है।

उदाहरण 3. गद्दी समुदाय के लोग सर्दियों में कहाँ रुकते हैं और गर्मियों में उनका मुख्य चरागाह कौन सा होता है?

› पहला, हमें यह समझना होगा कि गद्दी भी मौसमी चरवाहे हैं, यानी वे मौसम के साथ जगह बदलते हैं।

› दूसरा, सर्दियों में पहाड़ों पर बर्फ़ गिरने लगती है, तो उन्हें गर्म जगह चाहिए होती है।

› तीसरा, गर्मियाँ आते ही बर्फ़ पिघलती है और ऊँचे पहाड़ों पर नई घास उगती है, जहाँ उनके पशु जा सकते हैं।

› तो, सर्दियों में वे शिवालिक की निचली पहाड़ियों में आ जाते हैं, जहाँ उन्हें ठंड से बचाव और सूखा चारा मिलता है।

› गर्मियों में, वे लाहौल और स्पीति जैसे ऊँचे घास के मैदानों, जिन्हें बुग्याल कहते हैं, की तरफ़ चले जाते हैं जहाँ भरपूर हरी घास मिलती है।

उत्तर – गद्दी समुदाय सर्दियों में शिवालिक की निचली पहाड़ियों में रुकते हैं, और गर्मियों में उनका मुख्य चरागाह लाहौल और स्पीति के ऊँचे घास के मैदान होते हैं।

उदाहरण 4. पहाड़ी चरवाहा समुदाय सर्दियों में ऊँचे पहाड़ों से नीचे क्यों आते हैं?

› पहला कदम: ऊँचे पहाड़ों पर सर्दियों में अत्यधिक ठंड और बर्फबारी होती है।

› दूसरा कदम: बर्फबारी के कारण ऊँचे चरागाह बर्फ से ढक जाते हैं, जिससे पशुओं के लिए चारा मिलना मुश्किल हो जाता है।

› तीसरा कदम: अपनी भेड़-बकरियों को ठंड और भूखे मरने से बचाने के लिए, चरवाहे निचले, कम ठंडे इलाकों या घाटियों की ओर चले जाते हैं जहाँ चारा उपलब्ध होता है।

उत्तर – चरवाहा समुदाय सर्दियों में ऊँचे पहाड़ों से नीचे इसलिए आते हैं ताकि उनके पशुओं को ठंड से बचाया जा सके और उन्हें आसानी से चारा मिल सके।

उदाहरण 5. धंगर समुदाय किस मौसम में महाराष्ट्र के मध्य पठारों में रहता है और क्यों?

› धंगर समुदाय मुख्यतः भेड़-बकरी पालता है।

› भेड़ें गीले मॉनसूनी हालात को बर्दाश्त नहीं कर पातीं।

› कोंकण जैसे तटीय इलाके मॉनसून में बहुत गीले और दलदली हो जाते हैं।

› इसलिए, मॉनसून की बारिश शुरू होते ही धंगर कोंकण छोड़कर सूखे पठारों की तरफ लौट जाते हैं।

उत्तर – धंगर समुदाय मॉनसून (बरसात) के दिनों में महाराष्ट्र के मध्य पठारों में रहता है, क्योंकि उनकी भेड़ें तटीय इलाकों के गीले, दलदली मॉनसूनी मौसम को सहन नहीं कर पातीं। ये पठार तुलनात्मक रूप से सूखे रहते हैं।

उदाहरण 6. अगर कर्नाटक में सूखा पड़ जाए, तो गोल्ला समुदाय के चरवाहे अपने पशुओं को लेकर कहाँ जाते हैं?

› सबसे पहले सोचो, सूखा कहाँ पड़ता है? पठारी इलाकों में।

› अब चरवाहों को अपने जानवरों के लिए क्या चाहिए? पानी और चारा।

› दक्षिण भारत में, सूखे के महीनों में पानी और चारा कहाँ मिलेगा? तटीय इलाकों में, जहाँ थोड़ी हरियाली हो सकती है।

› तो, गोल्ला समुदाय सूखे से बचने के लिए तटीय इलाकों की तरफ जाएगा।

उत्तर – कर्नाटक में सूखा पड़ने पर गोल्ला समुदाय के चरवाहे अपने पशुओं को लेकर तटीय इलाकों की तरफ चले जाते हैं।

उदाहरण 7. मान लीजिए बंजारों का एक समूह एक गाँव से 50 किलो गेहूँ खरीदता है और उसे 100 किलोमीटर दूर एक दूसरे गाँव में बेचने ले जाता है. रास्ते में उन्हें अपने 15 बैलों के लिए चरागाह भी ढूंढना है. वे यह काम कैसे करते थे?

› सबसे पहले, बंजारे अपने बैलों पर गेहूँ लादते थे. गेहूँ बेचने का मतलब व्यापार करना था.

› वे अपने परिवार और जानवरों के साथ एक 'कारवाँ' में चलते थे, जिससे सुरक्षा बनी रहे.

› हर रात, वे ऐसी जगह रुकते थे जहाँ उनके बैहनों के लिए हरा-भरा चरागाह मिल सके, ताकि जानवर खा सकें और आराम कर सकें.

› यात्रा के दौरान, वे छोटे-छोटे गाँवों में रुककर गेहूँ बेचते थे और बदले में गाँववालों से खेत जोतने वाले जानवर या कोई और ज़रूरी चीज़ें खरीद लेते थे.

› 100 किलोमीटर की यात्रा पूरी करके, वे उस दूसरे गाँव में पहुँचते और बाकी बचा गेहूँ बेचते थे.

› इस तरह वे व्यापार और पशुपालन दोनों एक साथ करते थे, जहाँ व्यापार के लिए जानवर ही उनके 'वाहन' होते थे और रास्ते में उन्हें चरागाह भी मिल जाता था.

उत्तर – बंजारों का समूह गेहूँ को बैलों पर लादकर, रास्ते में चरागाह ढूँढते हुए और स्थानीय लोगों से सामान का आदान-प्रदान करते हुए 100 किलोमीटर की यात्रा पूरी करता था, जिससे उनका व्यापार और जानवरों की देखभाल दोनों होते थे.

उदाहरण 8. रेगिस्तान में राइका समुदाय अपनी जीविका कैसे चलाता है, और उन्हें किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?

› पहला, रेगिस्तानी इलाकों में बारिश कम होने से खेती मुश्किल होती है, तो राइका मुख्य रूप से ऊँट और भेड़-बकरियाँ पालते हैं।

› दूसरा, वे अपने जानवरों के लिए चरागाह और पानी की तलाश में मौसमी रूप से एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं।

› तीसरा, उन्हें यह देखना होता है कि किस रास्ते से जाना है, किस गाँव से गुजरना है, और रास्ते में किसानों से अच्छे संबंध बनाने पड़ते हैं ताकि उनके जानवर खेतों में घास चर सकें और खेतों को उपजाऊ बना सकें।

› चौथा, उन्हें सही समय पर आवाजाही करनी होती है ताकि उन्हें और उनके जानवरों को पानी और चारा दोनों मिल सकें।

उत्तर – राइका समुदाय खेती के साथ-साथ ऊँट और भेड़-बकरियाँ पालकर अपनी जीविका चलाता है, और चरागाह व पानी की तलाश में मौसमी आवाजाही करते हुए, किसानों से संबंध बनाए रखते हुए और यात्रा का सही समय चुनते हुए वे जीवन यापन करते हैं।

उदाहरण 9. गुज्जर बकरवाल समुदाय सर्दी और गर्मी में अपने जानवरों के साथ अलग-अलग जगहों पर क्यों जाते हैं? इसमें उनके सामने क्या चुनौतियां आती हैं?

› पहला कदम: गुज्जर बकरवाल जाड़ों में शिवालिक की निचली पहाड़ियों में आते हैं क्योंकि ऊँची पहाड़ियों पर बर्फ जम जाती है और चारा खत्म हो जाता है.

› दूसरा कदम: गर्मियों में वे पीर पंजाल के दर्रों को पार करके कश्मीर की घाटी और ऊँचे बुग्यालों (घास के मैदानों) की तरफ जाते हैं, क्योंकि तब वहाँ बर्फ पिघलती है और हरी घास उगती है.

› तीसरा कदम: चुनौती यह है कि हर बार उन्हें पानी और चरागाहों की सही जगह ढूंढनी पड़ती है, रास्ते में उन्हें स्थानीय किसानों से बात करनी पड़ती है ताकि उनके खेतों को नुकसान न हो, और जानवरों को सुरक्षित भी रखना होता है.

उत्तर – गुज्जर बकरवाल मौसमी चरागाहों का उपयोग करते हैं ताकि उनके पशुओं को साल भर पर्याप्त चारा मिल सके. इसमें पानी, चरागाह, सुरक्षित रास्ते और स्थानीय समुदायों के साथ समन्वय की चुनौतियाँ आती हैं.

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज के एक बड़े वर्ग की जीवनशैली और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को समझाता है। इन समुदायों के नाम और उनके आवागमन के पैटर्न को याद रखना बहुत ज़रूरी है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 3-5 अंकों में पूछा जाता है। उनकी सर्दी और गर्मी की यात्रा का विस्तृत वर्णन ज़रूर तैयार करें।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में 'पहाड़ी चरवाहा समुदायों की मौसमी आवाजाही' पर आ सकता है, जिसमें गद्दी और गुज्जर बकरवाल दोनों के उदाहरण देने पड़ सकते हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। चरवाहा समुदायों की मौसमी आवाजाही और चरागाहों के कुशल उपयोग पर प्रश्न अक्सर आते हैं।

• यह सवाल बोर्ड परीक्षा में आ सकता है कि धंगर समुदाय के जीवनशैली और किसानों के साथ उनके तालमेल पर एक संक्षिप्त नोट लिखें, तो इन बातों को ध्यान रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। चरवाहों के अलग-अलग समुदायों और उनकी जीवन-शैली में अंतर पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं।

• यह सवाल बोर्ड परीक्षा में 'घुमंतू समुदायों की जीवनशैली' या 'भारत के चरवाहा समुदायों का योगदान' वाले हिस्से में आ सकता है, इसलिए बंजारों की व्यापारिक भूमिका पर ख़ास ध्यान देना.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि कैसे अलग-अलग समुदाय पर्यावरण और सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हैं. इसके 'क्यों' और 'कैसे' पर ध्यान देना.

एक नज़र में रिवीज़न

› घुमंतू चरवाहे: जानवर चराने वाले, मौसम अनुसार स्थान बदलते, इतिहास में अनदेखे।

› गुज्जर बकरवाल: जम्मू-कश्मीर, सर्दी में नीचे, गर्मी में ऊपर, भेड़-बकरियों के साथ चारे की तलाश।

› गद्दी: हिमाचल प्रदेश के मौसमी चरवाहे, सर्दियों में शिवालिक, गर्मियों में लाहौल-स्पीति।

› पहाड़ी चरवाहे: मौसमी आवाजाही, चरागाहों का कुशल उपयोग, प्रकृति संग तालमेल।

› महाराष्ट्र के धंगर: पठार-कोंकण, भेड़-बकरी, मौसम-आधारित प्रवास, किसानों से तालमेल।

› दक्षिण भारत के गोल्ला, कुरुमा, कुरुबा: पठारी चरवाहे, वर्षा/सूखे पर आधारित मौसमी यात्राएँ।

› बंजारे: घुमंतू चरवाहा-व्यापारी, लंबी यात्राएँ, अनाज व सामान का व्यापार.

› चरवाहों को पानी, चरागाह, मार्ग और किसानों से संबंधों का प्रबंधन करना पड़ता है.